International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 20-03-2019; Accepted: 22-04-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 3; May 2019; Page No. 25-27

कथाकार चित्रा मुद्गल जी की कहानी संग्रह "पेंटिंग अकेली है...." में व्यक्ति संघर्ष

कृष्ण कुमार शर्मा
शोधार्थी, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, विश्व विद्यालय विभाग, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा मद्रास स्नातकोत्तर केन्द्र,धारवाड़, कर्नाटक भारत|

सारांश
किसी भी कहानी की मूलतः उत्पति व्यक्ति के जन्म से ही मानी जाती है| हिन्दी साहित्य में अनेक विधाएं हैं| 'कहानी' विधा का उद्गमन मुख्य रूप से भारतेन्दु जी की रचना 'परिहंसिनी' सन१८७५ से माना जाता है|
प्रस्तुत लधु शोध-प्रबन्ध वर्तमान हिन्दी साहित्य की बहुचर्चित रचनाकार श्रीमती चित्रामुद्गल जी द्वारा रचित कहानी संग्रह 'पेंटिंग अकेली है...' पर आधारित है|
चित्रा जी की इन कहानियों में मनुष्य के जीवन में आने वाले उतार-चढ़ाव और अनेकों प्रकार से जीवन के संघर्ष पूर्ण पलों को अनेकों पात्रों के माध्यम से पाठको तक बड़ी सहजता से पहुँचाया गया है| जिनमें मनुष्य न चाहते हुए भी जीवन में अनेक पहलुओं पर सदैव संघर्ष शील रहता है| कभी कर्मों के कारण तो कभी लालसा और पिपाशा की वजह से तो कभी पारिवारिक बंधन तो कभी समाज और समुदाय या फिर धार्मिक वजह अथवा फिर राजनैतिक और कभी परम्परा के वशीभूत होकर वह अपने जीवन पर्यन्त संघर्ष के जाल में घूमता रहता है क्योंकि वैसे भी कहा जाता है कि, जीवन का दूसरा नाम संघर्ष है|

मूल शब्द: चित्रा मुद्गल का जीवनवृत एवं व्यक्तित्व, प्राम्भिक परिवेश, शिक्षा, जीवन संघर्ष, पारिवारिक पृष्ठभूमि, समाज सेवा और उनके कार्य, सम्मान और पुरस्कार

प्रस्तावना
प्रस्तुत लधु शोध-प्रबन्ध "चित्रा मुद्गल जी की कहानी संग्रह 'पेंटिंग अकेली है...' में व्यक्ति संघर्ष", के माध्यम से मैंने यह बताने का प्रयास किया है की लेखिका चित्रा मुद्गल जी का जीवन स्वयं संघर्ष पूर्ण रहा है, इसी लिए उनकी कहानियों में जीवन-संघर्ष के पुट हैं| इस शोध के माध्यम से संघर्ष रूपी जीवन पर प्रकाश डालने का प्रयास है|
कहानीकार कहानी में प्रमुख रूप से व्यक्तित्व और अपनी रचनाशक्ति का परिचय अपनी भाषा के द्वारा देता है| साथ ही कहानी पर कहानीकार के जीवन से मिली मानवता और मानवीय संवेदना के साथ-साथ देशकाल, समाज और समाज की रीति, परिस्थिति का चित्रण स्वतः होने लगता है कुछ ऐसे ही कल्पनाओं को अपनी लेखनी से मूर्त रूप प्रदान करनी वाली वर्तनाम युग की प्रशिद्ध कहानीकार चित्रा मुद्गल जी हैं|

चित्रा मुद्गल का जीवनवृत एवं व्यक्तित्व
श्रीमती चित्रा मुद्गल जी का जन्म १० दिसम्बर १९४४ को चेन्नई(मद्रास) में हुआ था| इनके बचपन का कुछ समय और किशोरावस्था मुंबई में बीती| मुद्गल जी के पिताजी का नाम श्री ठाकुर प्रताप सिंह तथा माताजी का नाम विमला देवी था| चित्रा जी का ननिहाल यानि माता जी का मायका प्रतापगढ़ जनपद (उत्तर-प्रदेश) के ग्राम आली शकरपुर में था | इनके नानाजी श्री गयाबक्श सिंह जी कई गावों के ताल्लुकेदार थे | इनके पिताजी भी जमींदार घराने से ताल्लुक रखते हुए भी रूढ़िवादी परिवार से थे| वे नेवी में एक अधिकारी थे तथा उस समय वे मुंबई में पदासीन थे| चित्रा जी के पिता में सद्गुणों के साथ विशेष रूप से ठाकुरों के नवाबी शौक भी थे जिनका चित्रा जी सदा ही विरोध करती थी|
चित्रा जी बचपन से ही सहज और सरल स्वभाव की रही है| यह सहजता और सरलता ही इनके लेखन की प्रेरणा रही है| इसी सहृदयता के कारण माँ के प्रति पिता का कठोर व्यवहार इन्हें ना पसंद था | हर बात को जान लेने की जिज्ञासा इनके स्वभाव में थी| अपने जिद्दी और जिज्ञासु स्वभाव के बारे में चित्रा जी 'सवाल दर सवाल' में लिखती हैं :- "अम्मा बताती हैं कि बचपन में तुम बहुत जिज्ञासु बच्ची थी| अस्थिर ! एक जगह न टिककर बैठने वाली| तुमसे मिलना, तुम्हे प्यार करना सभी को अच्छा लगता था मगर तुम चुप नहीं बैठ सकती थी| यह क्या है?, क्यों है?, कैसे है?, सवाल पर सवाल कि तुम्हें बच्चा समझकर लड़ियाने वाला हैरान हो खीझ उठता कि हर चीज को जानने-समझने की जिद्द होती तुम्हारी |" पिता का अमानवीय व्यवहार उन्होंने कभी स्वीकार नहीं किया | चित्रा जी बचपन से ही निर्भीक विचार और स्वतंत्र चिन्तन से पूर्ण रही हैं अपने बारे में उनका विचार है – "दृढ़ परम्परा के आतंक से मुक्त होकर उसने तय कर लिया था,वह वही करेगी जो वह करना चाहती है न सोच गिरवी रख सकती है न मस्तिष्क, न भावनाएँ, न विचार, न दृष्टि इसलिए कि वह लडकी है|"

प्रारम्भिक परिवेश
साहित्य संगीत और कला की त्रिवेणी इनके हृदय में सदैव प्रवाहित रही है| यही कारण है कि साहित्य के साथ-साथ चित्रकला और नृत्य कलाओं से भी चित्रा जी का आत्मीय संबंध था| नृत्यकला में इनकी रूचि को देखकर इनकी दादी ने विरोध किया क्योकि वे नृत्य को ठाकुर परिवार की परम्परा के विरुद्ध मानती थीं | गोरखनाथ तिवारी के साथ वार्तालाप में चित्रा जी बताती हैं कि –"मेरी दादी मेरे नृत्य सीखने के एकदम विरुद्ध थी| कहने लगी – नाच सीखकर पतुरिया (नाचने वाली) बनना है का ?" लेकिन चित्रा जी की नृत्य सीखने की जिद्द के आगे परिवार वालों को झुकना पड़ा| चित्रकला में भी चित्रा जी का गहरा रुझान था| स्वयं चित्रा जी के शब्दों में –"उनके चित्रकला शिक्षक मि0 जोशी उनके चित्रों को देखकर विस्मय से भर उठे| वे दिए गए विषय को छोड़कर अचानक कुछ और बनाने लगती| 'पराग' की रंगभरी प्रतियोगिताओं के कई पुरस्कार प्राप्त की थीं| महाराष्ट्र की चित्रकला परीक्षाएं भी उत्तीर्ण की| साहित्य लेखन की रूचि चित्रा जी को कुछ पिता से और कुछ समाज-विसंगतियों से प्राप्त हुई| माँ के अच्छे संस्कारों से प्रभावित चित्रा जी ने श्रमिकों, दलितों और निम्न वर्ग के अधिकारों की रक्षा करना अपना लक्ष्य बनाया|

शिक्षा
श्रीमती चित्रा मुद्गल जी का बचपन निहाली खेडा गाँव में बीता था| शुरुआती प्राथमिक शिक्षा उन्नाव जिले के भरतपुर कन्या पाठशाला में पूरी हुई थी| जब ये शुरुआत में कुछ दिन प्राइमरी कक्षा की छात्रा थीं तो इन्हे गाँव के विद्यालय में पढ़ने जाने का अवसर मिला वहां वे टाटपट्टी पर बैठकर और लकड़ी से बने तख्ती (एक प्रकार का लिखने के लिए प्रयोग किया जाने वाला उपकरण) पर सफ़ेद खड़िया (छूही) को पीस कर दवात में घोल देती थी| इसके बाद सफ़ेद धागे को उस दवात में डुबोकर तख्ती पर सत्तर-पार (लाइन खीचने का तरीका) कर उसपर सरपत के सरकंडे को ब्लेड से छील कर बनाई गई कलम के द्वारा लिखती थीं| चित्रा जी को पढ़ना और चित्र बनाना साथ ही जमकर बहस करना बहुत अच्छा लगता था| प्रारम्भिक शिक्षा मुंबई के बी.एल.रुइया स्कूल में हुई थी| उसके बाद इंटर तक पुणे बोर्ड से और आगे स्नातक की पढ़ाई मुंबई विश्वविद्यालय से पूरी की| कुछ दिनों के उपरान्त चित्रा जी ने पत्राचार के माध्यम से मुंबई के एस. एन. डी. टी. महिला विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की शिक्षा पूर्ण की|
इनकी नृत्यकला में भी अपार रूचि थी, घर वालों के लाख विरोध पर भी इन्होंने गुरु सुधा डोरा और सावित्री देवी जी से भरतनाट्यम की विधिवत शिक्षा ग्रहण की थी|

जीवन संघर्ष
वैसे तो चित्रा जी एक चित्रकार बनाना चाहती थी लेकिन नियति ने उन्हें एक सफल लेखिका बना दिया| कहते हैं कि कर्म को हम नहीं चुनते बल्कि कर्म हमें चुनता है| इंटरमीडिएट से ही ये ट्रेड यूनियन मूवमेंट से जुड़ गयीं| चित्रा जी ईश्वर और धर्म की अपेक्षा मानवता में विश्वास करती हैं| उनका विचार है कि सच्ची सेवा मानवता के द्वारा मानव ही कर सकता है| वही मनुष्य है जो जीव मात्र के लिए जिये और उसी के लिए मरे| मानव के प्रति उनकी निजी सहानुभूति और संवेदना का प्रसार सर्वत्र है| पत्रकार ओम निश्छल से बातचीत करते हुए अपने शैशव की एक घटना को याद करते हुए बताती हैं कि –"गाँव के घर पर एक बार बरीं के बेटे को बड़े बप्पा नीम के तने से बांधकर हंटर से मार रहे थे यह देख कर मैं चीख पड़ी थी| वह चीख मैं आज तक नहीं भूली हूँ|" दरअसल बाल मन पर अंकित एक-एक अक्षर अमर हो जाता है | बचपन की उस घटना से क्षुब्ध होकर उनके भावुक मन में गरीब,शोषित,पीड़ित, दमित,निम्न वर्ग के लोगों के प्रति सहानुभूति उत्पन्न होती गयी तब उन्होंने एक ओर इन लोगों के लिए कीचड़ भरी गलियों में संघर्ष किया वही दूसरी ओर साहित्य के माध्यम से पाठकों के हृदय को भी झकझोरने की कोशिश की| उन्होंने मानव जीवन विशेषकर नारी जीवन को समस्त कुंठा,जड़ता,आस्था-अनास्था, जय-पराजय और मानसिक संघर्ष को बड़ी सरलता से उद्घाटित किया है

| इनके साहित्य में आक्रोश का सीधा पुट नहीं, दुर्दशा की झाँकी है जो मानवीय संवेदना को गहरे में छू जाती है और पाठक से सीधे कार्यवाही की मांग करती हैं | ऐसा ही कुछ जीवन चित्रा जी का स्वयं का भी था | उन्होंने बाइयों के उत्पीड़न व बदहाल जीवन के लिए इन्होनें संघर्ष किया | इसी क्रम में मात्र २० वर्ष की अवस्था में चित्रा जी बाइयों के लिए संघर्षरत संस्था 'जागरण' की सचिव पद पर चयनित हुई | यहीं से चित्राजी के मन में समाज के प्रति संघर्ष करने की प्रेरणा मिली जिससे प्रेरित होकर समाज को एक सच्चा मार्ग दिखाने का बीड़ा उठाया और उनकी लेखनी कभी न रुकने के रास्ते पर निकल पड़ी |

चित्रा मुद्गल जी ने कहानियों का तथ्य उनके आसपास के परिवेश से लिया है | वास्तव में उनके पास देखने की उदात्त दृष्टि है | उनकी कहानियों की कथावास्तु में विविधता है, जिसमें अनेक उतार चढ़ाव झेंले | उनकी कहानियों का प्रारम्भ, मध्य और अंत रोचक तथा विविधतापूर्ण होता है | कहानियों का कथोपकथन या संवाद के विविध रूप मिलते हैं | कहानी साहित्य में चित्रा मुद्गल जी एक बहुत गुणी और अनुभवी कहानीकार है | उन्होंने अपनी लेखनी से कहानी की कथा को संवादों के माध्यम से अंतिम हल तक पहुँचाया है |

चित्रा मुद्गल जी ने अपनी कहानियों में समाज के विविध धरातल पर जी रहे लोगों की समस्याओं को स्वर दिया है | समकालीन जीवन एवम युग यथार्थ का खुरदुरापन उनकी कहानियों में मौजूद है | मौजूदा परिस्थिति, उस परिस्थितियों में स्त्री की स्थिति,नियति,व्यवस्था के खिलाफ रचनाओं में उठती चेतावनी, नारी जागृति, स्त्री चेतना तथा उसके लिए संघर्ष एवं प्रतिरोध उनकी रचनाओं की विशेषता है | जागरण जैसी संस्थाओं के साथ जुड़ने से उनकी अनेक सामाजिक समस्याओं से मुठभेड़ हुई | उससे निर्मित अनुभव एवं संवेदना उनकी कहानियों की पृष्ठभूमि तैयार करती है और लिखने के लिए उर्जा प्रदान करती है |

पारिवारिक पृष्ठभूमि

रूढ़िवादी परिवार और उस पर सख्त अनुशासन ही था जिसने चित्रा ठाकुर को चित्रा मुद्गल बनने की राह में अनेक रोड़े अटकाए | सन १९६४ ई में जब चित्रा जी बीस वर्ष की थी तो उन्होंने कालेज में आयोजित कहानी प्रतियोगिता में भाग लिया | उनकी कहानी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया | पूर्व घोषणानुसार उनकी कहानी सारिका पत्रिका में प्रकाशित होनी थी | उनके गुरु प्रो. अनंत राम त्रिपाठी जी ने कहानी को सारिका के कार्यालय में देने को कहा | अवध नारायण मुद्गल जी के साथ वह उनकी पहली मुलाकात थी |

चित्रा जी अपनी उसी पहली मुलाकात के विषय में बताते हुए कहती हैं, "सेंट जेवियर में एक वाद-विवाद प्रतियोगिता के सिलसिले में उनसे मुलाकात हुई थी | इस प्रतियोगिता में हमारे सर श्री जगदम्बा प्रसाद दीक्षित जूरी में थे | हमने ट्राफी जीती तो हमें जूरी से मिलवाया गया | जब मुझे बताया गया कि ये अवध नारायण मुद्गल जी हैं तो मैनें उनसे पूछा कि आप ही मुझे लिफ्ट में मिले थे ? उनके हाँ कहने पर बरस पड़ी, आपकी चिठ्ठी मुझे मिल गई थी | अब एक लिस्ट भी दे दीजिये कि लेखन की ए बी सी डी सीखने के लिए मुझे कौन-सी किताबें पढ़नी चाहिए | तो यह थी हमारी पहली उनसे मुलाकात |" चित्रा जी ने अपने पिता और परिवार की इच्छा के खिलाफ होकर श्री अवधनारायण मुद्गल जी से प्रेम-विवाह किया था | उस समय प्रेम-विवाह के विषय में सोचना भी एक अपराध जैसा था | मुद्गल जी उत्तर-प्रदेश के आगरा जनपद के बाह तहसील ऐमनपूरा गाँव के ब्राह्मण परिवार से थे | १७ फरवरी १९६५ ई को इन्होंने अन्तर्जातीय प्रेम-विवाह किया जिसके परिणाम स्वरूप इनके पिताजी और पूरा परिवार इनसे क्रोधित हुआ | उस समय चित्रा जी की उम्र बीस वर्ष की थी | आज भी जब वे खाली होती हैं तो अपना समय परिवार के साथ बिताना पसंद करती हैं | चित्रा जी के कथनानुसार –"शाश्वत,अनघा,आद्या के साथ खेलना, घूमना,गाना,नाचना सैर सपाटे के लिए निकल जाना | इसके अतिरिक्त चित्रा जी कभी-कभी अपने रिक्त समय को अपनी रुचियों-अभिरुचियों के अनुसार भी बिताती थी, जैसे 'चित्र बनाना, पढ़ना, कुमार गंधर्व को सुनना, जम कर बहस करना | नए-नए नाटक देखना,चित्र-प्रदर्शनियों में जाना,समुद्र में नहाना | वास्तव में चित्रा जी स्वभावगत कोमल हृदया हैं किन्तु अन्याय, अत्याचार और शोषण के आगे झुकना उन्हें स्वीकार नहीं है | साहित्य,संगीत और कला में पारंगत चित्रा जी जन सामान्य की सेवा में भी संलग्न हैं |

समाज सेविका और उनके कार्य

चित्रा जी एक धनाढ्य परिवार से होते हुए भी गरीबी से अच्छी तरह से परिचित थी | चित्रा जी को ठाकुरों का राजसी जीवन रास नहीं आया साथ ही उन्होंने उस विलासी जीवन को त्याग कर मजदूरों एवं श्रमिकों के हितों के लिए आवाज उठाई | चित्रा जी ने अपने जीवन में संघर्ष किया और उसी संघर्ष को अपनी लेखनी में समेटकर अपनी रचनाओं में उकेरा | उन रचनाओं ने पाठकों को संचेतना का अहसास कराया, उन्होंने कई संस्थाओं के साथ जुड़कर कार्य किया |

मुंबई की झोपड़पट्टी में रहकर दूसरों के घरों में काम कर के अपना और परिवार का पालन-पोषण करने वाली बाइयों के लिए काम करने वाली संस्था 'जागरण' में १९६५ ई. से १९७२ ई. तक सचिव के रूप में कार्य किया | उन्होंने कामगार आघाडी,मजदूर यूनियन की कार्यकर्ता के रूप में कार्य किया | महिलाओं की संस्था 'स्याधार' की कार्यकर्ता के रूप में सन १९७९ ई. से १९८३ ई तक कार्य किया | राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् की वूमन स्टडीज यूनिट की कई महत्वपूर्ण पुस्तक योजनाओं में सन १९८६ ई. सन १९९० ई तक निदेशक के तौर पर काम किया | चित्राजी फिल्म सेंटर बोर्ड की मानद सदस्या के पद पर सन १९७८ और १९९९ में कार्य कर चुकी हैं | 'आशीर्वाद फिल्म अवार्ड' में वर्ष १९८० ई में बतौर जूरी काम किया | 'महात्मा गाँधी प्रतिष्ठान मारीशस' द्वारा रचनाकार से भेंट कार्यक्रम के लिए १९९० ई में आमंत्रित की गयीं | आकाशवाणी की 'सर्वभाषा' राष्ट्रीय नाट्य स्पर्धा' की १९९५ ई में जूरी सदस्य रहीं | 'माधुरी' पत्रिका की लगातार चार वर्ष तक आमुख लेखिका रहीं | 'समन्वय" उत्तर प्रदेशीय महिला मंच, सूर्या संस्थान, स्त्री शक्ति एवं समता महिला मंच की कार्यकर्ता रहीं | "चिमु" नाम से कई पत्रिकाओं में धाराप्रवाह लेखन किया | छठें और सातवें विश्व हिंदी सम्मलेन की 'सम्मान समिति' और 'शैक्षिक समिति' की सदस्य रहीं |

चित्रा जी ४९वें रास्ट्रीय फिल्म पुरस्कार एवं इंडियन पैनोरमा की वर्ष २००२ ई की सदस्या रह चुकी हैं | आई.सी.सी.आर की मौलाना आजाद निबंध प्रतियोगिता (सार्क) की २००० से २००२ ई तक जूरी सदस्या रह चुकी हैं | इसके अतिरिक्त चित्रा जी प्रसार भारती बोर्ड की वर्ष २००३ से २००७ तक सदस्या रहीं, वे नेशनल बुक ट्रस्ट की हिंदी सलाहकार समिति की मानद सदस्या रह चुकी हैं | उन्हें मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के संस्कृति विभाग की वरिष्ठ फैलोशिप भी मिल चुकी है |वे वर्ष २००५ से २००८ तक प्रसार भारती के इंडियन क्लासिक की चेयरपर्सन भी रह चुकी हैं | इन सबके अलावा वे वर्ष २००५ ई से २००८ ई तक अंतरिक्ष एवं परमाणु ऊर्जा विभाग की संयुक्त हिंदी सलाहकार समिति की मानद सदस्या एवं वर्ष २००६ से २००९ तक डाकतार विभाग में हिंदी सलाहकार समिति की मनोनीत सदस्या भी रह चुकी हैं | इतनी उपलब्धियों को पाने के बाद भी उनका सरल, सहज व्यवहार मन को छू जाता है | दर्प की छाया तक उनके व्यक्तित्व पर नहीं पड़ी और यही कारण है कि उनके असंख्य प्रशंसक हैं | संघर्ष के ताप में तपा कुंदन-सा उनका जीवन उनके प्रशंसकों के लिए अनमोल निधि है |

सम्मान और पुरस्कार

अपनी सशक्त लेखनी से हिंदी साहित्य को दानी बनाने वाली चित्रा मुद्गल हमारे हिंदी साहित्य जगत का मान हैं | जीवन की समस्याओं को बड़ी सहजता से अपनी रचनाओं में उतारने और अपने साहित्य में उनका सत्य एवं सटीक चित्र खींचने के लिए चित्रा मुद्गल जी पाठकों के बीच उनके हृदय में गहरी पैठ बनाती हैं | प्रतिभाशाली होने के कारण चित्रा जी को विभिन्न सम्मानों से विभूषित किया गया और अनेक पुरस्कार प्रदान किये गए हैं | उनके इस सम्मान के पीछे पाठकों का समर्थन है | पत्रकार ओम निश्छल जी से बात करते हुए कहती हैं कि-"पाठक अपनी गाढ़ी कमाई में से जिस किताब को खरीदकर या वाचनालय या मित्रों से प्राप्त कर पढ़ने का निर्णय करता है, उसकी सत्ता बहुत बड़ी है |" चित्रा मुद्गल जी को उनकी श्रेष्ठ रचना धर्मिता के लिए समय-समय पर विभिन्न सम्मानों और पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जो निम्नवत हैं

उनके उपन्यास 'आवां' के लिए 2003 में के के बिड़ला का प्रतिष्ठित सम्मान 'व्यास सम्मान' दिया गया था। वे तेरहवा 'व्यास सम्मान' पाने वाली देश की प्रथम लेखिका हैं। इसके अतिरिक्त उपन्यास 'आवां' के लिए चित्रा जी को इंग्लैंड का 'इन्दु शर्मा कथा सम्मान पुरस्कार' और दिल्ली अकादमी के 'हिन्दी साहित्यकार सम्मान पुरस्कार', सहित अनेक सम्मान भी प्राप्त हुये हैं। संप्रति दिल्ली में निवासित होकर वे सतत साहित्य सृजन में लगी हैं। राष्ट्रीय एकता एवं सदभावना के लिए 'प्रज्ञा सम्मान' और 'गिलिगडु' उपन्यास के लिए ग्वालियर, मध्यप्रदेश का 'चक्रधर' सम्मान, चित्राजी को उनकी बाल कथा संग्रह 'जंगल राज' के लिए अकादमी का 'बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'ग्यारह लम्बी कहानियाँ' कथा संग्रह के लिए बिहार राजभाषा विभाग द्वारा 'राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह पुरस्कार'| 'एक जमीन अपनी' उपन्यास के लिए ग्रामीण विकास संगठन, मुंबई द्वारा 'फणीश्वरनाथ रेणु साहित्य पुरस्कार'| सामाजिक कार्यों के लिए विकास फाउंडेशन द्वारा 'विदुला सम्मान' | चित्राजी के प्रसिद्ध उपन्यास 'आवां' के लिए उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का 'साहित्य भूषण सम्मान', हिमाचल प्रदेश का प्रतिष्ठित शिखर सम्मान वर्ष २००७ में देश के चौदह प्रमुख महिलाओं में से एक चित्रा जी को भी "कल्पना चावला एवार्ड" से सम्मानित किया गया, तथा २०१० में चिन्नप भारती प्रगतिशील लेखक संघ तमिलनाडु द्वारा 'चिन्नप भारती सम्मान' और 'उदयराज सिंह स्मृति पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था |

चित्रा जी के समग्र जीवन एवं साहित्य का अध्ययन करने पर उनकी एक अलग छवि पाठक के हृदय में समा जाती है | उनके साहित्य में झाँकने वाले पाठक वर्ग को अपनी अनुभूतियों की प्रतिछाया जब उसमें दिखाई देती है तो पाठक भाव विभोर हो जाता है | उनके सभी पात्र विशेषकर नारी पात्र अपने परिवेश में जीवन की जद्दोजहद से जूझते-लड़ते कभी लहुलुहान होते हैं तो कभी उस लड़ाई में विजय हासिल करते दिखलायी देते हैं | यही कारण है कि चित्रा जी अपने प्रारंभिक लेखन काल से लेकर आज तक बराबर सम्मानित और समादरित बनी रही और भविष्य में भी बनी रहेंगीं |

चित्रा जी ने अपनी रचनाओं में भारतीय संस्कृति व राष्ट्रीय नैतिक मूल्यों को पूर्ण ईमानदारी के साथ प्रस्तुत किया है | उनके कथा साहित्य का विश्लेषण करने के बाद एक तथ्य स्पष्ट रूप से उभरकर आता है कि लेखिका ने अपनी सूक्ष्म अंत: दृष्टि के बलबूते पर नारी को आज के युग, आज के समाज व आज के ज्वलंत सन्दर्भों की पीड़ाओं, विसंगतियों व उपेक्षाओं के परिपेक्ष्य में उजागर करने के लिए नारी के विविध रूपों के अपनी रचनाओं में न सिर्फ अभिव्यक्ति दी है बल्कि एक जागरूक कथाकार के रूप में समाज के भीतर तक पहुँचने का प्रयास किया है | उस प्रयास

को उनकी लेखनी ने एक अरसे से पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों के माध्यम से वृहत, पाठक वर्ग तक संप्रेषित करती रही है और सदैव करती रहेगी | यही उनकी साहित्य में श्रीवृति है, यही उपलब्धियाँ है और यही उनका अवदान है |
अंत में कहा जा सकता है कि प्रत्यक्ष जीवनानुभवों की भित्ति पर ही समस्याओं को चित्रा जी ने रचनात्मक आयाम प्रदान किये हैं | प्रत्यक्ष जीवनानुभवों की भित्ति पर निर्मित चित्रा जी का लेखन जगत क्रांति चेष्टा के भीतर लोक-मंगल का पथ प्रशस्त करता है | लेखिका सामाजिक पुनर्निर्माण और संरचना के लिए साहित्य को एक कारगर विकल्प के रूप में मान्यता प्रदान करती है | माँ सरस्वती की सेवा में समर्पित चित्रा जी स्वस्थ और प्रसन्न रहकर सृजनशील रहते हुए दीर्घायु को प्राप्त हों, ऐसी ही मेरी ईश्वर से प्रार्थना है |

निष्कर्ष

चित्रा मुद्गल जी ने अपनी कहानियों में स्त्री और पुरुष दोनों में मनोविज्ञान को उद्घाटित कर अपने लेखकीय सरोवर के लिए जगह का निर्माण किया है | उनकी कहानियों में ग्राम्य परिवेश से लेकर बिछुए, सिंदूर उतारती आधुनिक नीता तक के स्त्री पात्रों का वैशिष्ट्य समाहित है | सामान्य गृहिणी की स्थिति से लेकर नौकरीपेशा स्त्रियों की भूमिका और चेतना तक, फ़िल्मी विज्ञापन से लेकर, पत्रकारिता के अन्याय के प्रतिकार में कड़ी स्त्री भंगिमा के साथ नारी के राजनैतिक, धार्मिक और आर्थिक प्रस्थान उसके अधिकार, कर्तव्य बदलती स्थितियों में नारी की भूमिका और योगदान आदि पर बड़ी ही समग्रता और संतुलित दृष्टिकोण से विचार किया है | उसके साहित्य का केंद्रीय स्वर यही है | स्त्री, स्त्री की शत्रु या स्त्री देह मात्र नहीं है | उनके नारी चरित्र अन्याय और शोषण के विरुद्ध नारी जागरण और मुक्ति के संदेशवाहक है |

सन्दर्भ

1. अंजु दुआ जैमिनी चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में संघर्ष और संचेतना कल्याणी शिक्षा परिषद् वर्ष २०१६
2. चित्रा मुद्गल चर्चित कहानियां सामयिक प्रकाशन वर्ष १९९२
3. चित्रा मुद्गल जिनावर किताबघर प्रकाशन वर्ष १९९६
4. चित्रा मुद्गल बयान भारतीय ज्ञानपीठ वर्ष २००४
5. चित्रा मुद्गल आदि-अनादि सम्पूर्ण कहानियाँ सामयिक प्रकाशन वर्ष २००७
6. चित्रा मुद्गल दस प्रतिनिधि कहानियाँ किताब घर प्रकाशन वर्ष २००५
7. चित्रा मुद्गल लपटें भारतीय ज्ञानपीठ वर्ष २००३
8. डॉ. अर्चना मिश्रा चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में युग-चिंतन भारतीय पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स,फैजाबाद, वर्ष २००८
9. डॉ. विनय कुमार स्त्री विमर्श भावना प्रकाशन, वर्ष २००५
10. निश्तर खानकाही नारी कल और आज हिंदी साहित्य निकेतन वर्ष २०००
11. डॉ. अर्चना मिश्रा चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में युग-चिंतन भारतीय पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स,फैजाबाद, वर्ष २००८
12. www.chitramudgal.info